कृपया आपसे अनुरोध है की पुस्तक की हार्डकॉपी प्रकाशन से प्रचुर मात्रा में मंगवा कर धर्म रक्षा हेतु वितरण करें

धन्यवाद ।

आर्य पिंकु प्रधान

हमारे फेसबुक पेज से जुड़ें

facebook.com/AryamOfficial

पुस्तकें हमें स्केन कर भेजें - Officialaryam@gmail.com

खण्डन–मण्डन,वैदिक,पुराने पुस्तकें या ऐसे पुस्तकें जो वर्तमान रीप्रिंट न हो रहा हो जिससे लोगों को ज्ञान मिले .

विश्व को आर्य बनाने केलिए हमारे साथ जुड़ें

यदि आचार्य चाणक्य प्रधानमंत्री होते...?

लेखक
प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति
(सुपुत्र-अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती)

सम्पादक
लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

यदि आचार्य चाणक्य प्रधानमन्त्री होते.....?

लेखक

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति

(सुपुत्र-अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती)

सम्पादक

लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

PH. 0120-2701095, 09910336715, 09810816715, 09871230321

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com

Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

द्वितीय आवृत्ति: जनवरी सन् २०१४ ई० मूल्य : दस रुपये मात्र

© : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

लेखक : प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति
प्रकाशक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
1058, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद
पिन-201001 (उ0प्र0)
दूरभाष- 0120-2701095, 09910336815
मुद्रक : स्वास्तिक ऑफसेट प्रिन्टर्स
चलभाष - 0991033815
संस्करण : द्वितीय - जनवरी सन् 2014 ई0
मूल्य : दस रुपये
सम्पादक : लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)
शब्द संयोजक : शिवओ३म् कम्प्यूटर्स, गाजियाबाद
चलभाष - ०९९१०५४५५२७

Yadi Acharya Chankya Pradhan Mantri Hote.....?

author : Pro. Inder Vidyavachaspati
Amar swami prakashan vibhag
1058, vivekanand nagar Ghaziabad-U.P.
INDIA
e.mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
website : www.amarswamiprakashanvibhag.com
PH. 0120-2701095, 09910336715, 09810816715, 09871230321

सम्पादकीय

लाजपत राय अग्रवाल

आचार्य चाणक्य इतिहास में वह प्रसिद्ध नाम है जिसके मन में आते ही उसकी नीति तथा अर्थशास्त्र का प्रभाव एवं उसके जानने की, पढ़ने की प्रबल इच्छा स्वत: ही जाग्रत हो उठती है। हर व्यक्ति के मन में यह उत्कट इच्छा बनी रहती है कि आखिर चाणक्य के अन्दर ऐसी कौन सी दैवीय प्रतिभा थी, जिसने उसे विश्व का सबसे बड़ा नीतिकार एवं अर्थशास्त्र का महारथी बना दिया।

प्रस्तुत पुस्तक में भी चाणक्य की जीवनचर्या तथा उसकी मानसिकता को दर्शाया गया है एवं आज के इस विकारित परिवेश से उसकी तुलना करके शिक्षा दी गई है। हमारे राजनीतिक महानुभावों को यह पुस्तक अवश्य पढ़कर सीख लेनी चाहिए एवं तदनुरूप अपने जीवन को अपने नीतिज्ञ

पूर्वजों की भांति ढ़ालने का प्रयत्न करना चाहिये।

मैं समझता हू प्रस्तुत पुस्तक से अवश्य ही हमारे राजनेताओं को सही दिशा निर्देश मिलेगा, इस पुस्तक का प्रचार-प्रसार देश व समाज के हित में अधिक से अधिक होना चाहिए। दम्भ, हठ और दुराग्रह का दुनिया में कोई इलाज नहीं है। और लोभ-लालच का भी कोई ठिकाना नहीं है, उन्हें चिन्तन करना चाहिये तथा इतिहास से सीख लेनी चाहिये कि अथाह खजाने का मालिक सिकन्दर भी दुनियां से खाली हाथ ही गया था, सब कुछ यहीं रह जायेगा, देश और समाज के साथ विश्वासघात करना-धोखा देना मनुष्य को नरक में ले जाता है। ऐसा शास्त्रीय वचन है।

किमधिकम् लेखेन्.....क्योंकि हमारे आज के राजनेता अपने को चाणक्य से भी बड़ा विद्वान् मानते हैं। इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

निवेदक:

लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

प्रतिष्ठाता :

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

PH. 0120-2701095, 09910336715, 09810816715, 09871230321

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com

Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

प्रस्तुत पुस्तक के विषय में

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता, स्वराज्य संग्राम के सेनानी, राज्यसभा के सदस्य माननीय श्री प्रोफेसर इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने पन्द्रह अगस्त सन् 1960 ई. को राष्ट्र के पथप्रदर्शन हेतु जीवन के अन्तिम दिनों में अर्थात् मृत्यु से बीस दिन पूर्व गम्भीर चिन्तन और मनन करके यह महत्वपूर्ण लेख दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित कराया था।

इस लेख में भारतीय आत्मा का साक्षात दर्शन है, कल्याण निहित है। मैं इस लेख को भारत के विधान का मूल मन्त्र समझता हूं और उस पवित्र दिवंगत आत्मा को इस महान पथ -प्रदर्शन के लिये श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

निवेदक:

लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

यदि आचार्य चाणक्य प्रधानमन्त्री होते.....?

आचार्य चाणक्य की नीति और वीर चन्द्रगुप्त मौर्य के परस्पर सहयोग से उस मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई थी, जिसकी उत्तरी सीमा हिन्दुकुश पर्वत को, पूर्वी सीमा बंगाल की खाड़ी को, दक्षिण की सीमा वर्तमान नल्लौर को और पश्चिमी सीमा अरब सागर को छूती थी। अफगानिस्तान, कश्मीर और नेपाल तक के राज्य उसी के अन्तर्गत आते थे। इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना जितनी कठिन थी, उसकी सुरक्षा उससे भी अधिक कठिन थी।

घर के अन्दर नन्द के साथियों का असन्तोष और बाहर विश्व विजेता सिकन्दर की सुशिक्षित सेनाओं और कुशल सेनापतियों का आतंक अतएव शत्रुओं का कोई अन्त नहीं था।

ऐसे संकटों से घिरे हुए साम्राज्य को चौबिस वर्षों तक निर्विघ्न चलाना, उसके लिए राज्य-नियमों के पालन की सुव्यवस्था करना, और इसी बीच में आक्रमणकारी यूनानियों को पीछे धकेल कर हीन सन्धि करने के लिए बाध्य करना यह कोई साधारण बात नहीं थी।

नए राज्यों के सम्मुख जो कठिनाइयां आया करती हैं, वे

सभी आचार्य चाणक्य के सामने थीं, वह मौर्य साम्राज्य के प्रधानामात्य थे। उनके समय में देश न केवल धन धान्य से समृद्ध रहा, अपितु वह सुरक्षित भी रहा। उसमें इतनी शक्ति थी कि उसकी सेनायें बढ़ती हुई विदेशी सेनाओं को परास्त करके पीछे धकेल दें।

महाराजा विक्रमादित्य से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व जिस महापुरूष ने विशाल साम्राज्य की स्थापना करके न केवल उसे सुखी और समृद्ध दशा में रक्खा वहीं विदेशी आक्रांताओं को मुंहतोड़ उत्तर भी दिया, वह यदि आज जीवित होते, और जनता उन्हें प्रधानमन्त्री का पद प्रदान करती तो वह क्या करते, कैसे रहते, किन उपायों से देश की प्रजा को सुखी बनाते और किस प्रकार आक्रान्ताओं को परास्त करते? ये सभी प्रश्न यद्यपि कल्पनात्मक प्रतीत होते हैं, तो भी उपयोगिता से खाली नहीं हैं। हम चाहें तो उनसे लाभ उठा सकते हैं।

भारतीय प्रधानमन्त्री चाणक्य का रहन-सहन

पहला प्रश्न यह है कि उनका रहन-सहन कैसा होता? इस प्रश्न का उत्तर हमें महाकवि विशाखदत्त के मुद्राराक्षस नाटक से मिलता है। भारत के प्रतापी सम्राट् चन्द्रगुप्त का सन्देश लेकर जब कंचुकी प्रधानामात्य आचार्य चाणक्य के पास पहुंचता है, तब उनके निवास स्थान की विभूति को देख कर कह उठता है-

अहो राजाधिराज-मन्त्रिणो विभूतिः।

तथाहि-

उपलशकलमेतद् भेदकं गोमयानां।
वटुभिरुपहृतानां बर्हिणां स्तूपमेतत्।।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभिः।
विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुण्ड्यम्।।

एक ओर गोबर के उपलों को तोड़ने के लिए पत्थर का टुकड़ा रक्खा है, और दूसरी ओर शिष्यों द्वारा लाई हुई कुशाओं का ढेर पड़ा है। कमरे की पुरानी दीवार की छत पर जलाने के लिए लकड़ियां सुखाई गई हैं, जिसके कारण छत का एक सिरा नीचे की ओर झुक गया है। यह है राजाधिराज के मन्त्री की विभूति[1]!

सम्भव है, इस वर्णन में कवि ने कुछ अत्युक्ति कर दी हो, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि आचार्य चाणक्य भारतवर्ष की राजधानी पाटलिपुत्र में रहते हुए भी तपस्वी मुनि की तरह रहते थे। इसीलिए जब सम्राट् चन्द्रगुप्त उनसे मिलने आता था, तो उनके पांव छूता था।

---

१. यह दृश्य उस समय की परिस्थिति का वर्णन करता है, इसका आशय यह नहीं है कि आज के आधुनिक युग में भी प्रधानमंत्री इसी परिवेश में रहे, अपितु इससे शिक्षा ली जा सकती है कि अपने जीवन को अत्यन्त सादा बनाकर रक्खे, व्यर्थ के आडम्बर एवं व्यसनों में न फंसे।

-लाजपत राय अग्रवाल

यदि आज आचार्य चाणक्य प्रधानमन्त्री होते तो कैसे निवास स्थान में रहते? सम्भवत: वह फूस की कुटिया में तो न रह सकते थे क्योंकि नई दिल्ली की गन्दी बस्तियों के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं छप्पर बनाने की आज्ञा शायद ही मिले, परन्तु यह हो सकता है कि वह एक ऐसे छोटे से मकान में रहते, निश्चय ही वह कोई ऐसा महल या शानदार भवन न होता जिसकी रक्षा के लिए राजकोष से लाखों की राशि व्यय करनी पड़ती।

सोवियत यूनियन के संस्थापक लेनिन के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वह विशाल साम्यवादी गणराज्य के एकाधिकारी बन कर भी बड़े सरकारी कार्यालय के समीप एक तीन कमरों के मकान में निवास करते रहे। वियतनाम के राष्ट्रपति के बारे में भी प्रसिद्ध है कि वह स्वतन्त्रता संग्राम के समय और उसमें जीत कर भी फकीरों की भांति रहते थे। इन दृष्टान्तों से प्रतीत होता है कि वर्तमान काल में, स्वाधीन और उन्नत जातियों में भी राज्याधिकारों का सादा जीवन व्यतीत करना असम्भव नहीं है, महल में रह कर भी सादा तथा त्यागमय जीवन व्यतीत किया जा सकता है, यह बात कहने में भली प्रतीत होती है परन्तु वस्तुत: असम्भव कल्पना जैसी है।

यह अजीब बात है कि जो महानुभाव स्वाधीनता संग्राम के दिनों में बिल्कुल सादा रहन-सहन और वेशभूषा को पसन्द करते थे, वही शक्तिसम्पन्न कुर्सियों पर बैठते ही उनका रंग-ढंग बदल गया। इन नई टीपटाप को हमारे

राष्ट्रीय जीवन में लाने की उत्तरदायिता अंग्रेजी राज्य की है। हमने अंग्रेजों से स्वाधीन होकर भी अपने कानून, विधान, भाषा, रहन सहन और कारोबार में इंग्लैण्ड की अधीनता मानो स्थिर रूप में स्वीकार कर ली है।

यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यदि आचार्य चाणक्य वर्तमान भारतीय संघ के प्रधानमन्त्री होते तो वह स्वयं अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करके, अन्य केन्द्रीय और प्रादेशिक मन्त्रियों को भी सादा जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर करते। उससे दो लाभ होते। एक तो अधिकारियों तथा सामान्य प्रजा के मध्य जो गहरी खाई बनती जा रही है, वह न बनती, और राष्ट्र के कोष पर इतना भारी आर्थिक बोझ भी न पड़ता। एक बार महात्मा गांधी ने कौंसिल प्रवेश के प्रस्ताव को अनुमति देते हुए यह इच्छा प्रकट की थी कि काग्रेसी मन्त्री पाँच सौ रुपये मासिक में अपना निर्वाह किया करें। आचार्य चाणक्य का निजी व्यय इससे शायद कुछ कम ही होता। परन्तु उस समय राजसी ठाट-बाट और भोग-विलास इन मन्त्रियों के कहां से पूरे होते? इसलिये गांधी की इच्छा धरी की धरी रह गयी।

मन्त्रियों के गुण और नियुक्ति

प्रधानमन्त्री का पहला कर्त्तव्य यह है कि वह अपने विद्वान् सहायक मन्त्री नियुक्त करे। उसके सम्बन्ध में हमें चाणक्य सूत्रों में स्पष्ट और सुन्दर निर्देश मिलते हैं। आचार्य

चाणक्य के नीति विषयक तीन ग्रन्थ* प्रसिद्ध हैं-

(१) कौटिल्य का अर्थ शास्त्र,

(२) चाणक्य नीति

(३) चाणक्य सूत्र इन तीनों में से संक्षिप्त और स्पष्ट होने के कारण चाणक्य सूत्र अत्यन्त उपयुक्त है। प्रत्येक शासक को और विशेष रूप से भारतीय शासक को चाणक्य सूत्रों का अनुशीलन अवश्य करना चाहिए देखिये इन चाणक्य सूत्रों में मन्त्री की नियुक्ति के बारे में कहा है कि-

श्रुतवन्तमुपधाशुद्धं मन्त्रिणं कुर्वीत

अर्थात् विद्वान् और लोभरहित व्यक्ति को मन्त्री पद पर नियुक्त करें। अत: मन्त्री विद्वान हों, यह बहुत आवश्यक है। मूर्ख मन्त्री **'जी हुजूरी'** वाले बन सकते हैं, वे मन्त्रणा के योग्य नहीं हो सकते। मन्त्रियों का निर्लोभ होना अत्यन्त आवश्यक है। यह कार्य ऊपर अर्थात् चोटी से आरम्भ होता है। मुख्य शासक निर्लोभ और सादा होगा, तो उसके सहायक भी तदनुरूप ही होंगे।

यह समझना कठिन नहीं है कि यदि आचार्य चाणक्य प्रधानमन्त्री होते तो वह केवल उन्हीं मन्त्रियों को नियुक्त करते जो जिस विषय के मन्त्री बन रहे हैं, उसके विशेषज्ञ हों

---

* यह तीनों ग्रन्थ आपको मूल व हिन्दी भाष्य सहित अमर स्वामी प्रकाशन विभाग के विक्रय विभाग में प्राप्त हो जायेंगे, इच्छुक सज्जन सम्पर्क कर सकते हैं।

लाजपतराय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

और अर्थ लोभ से ऊंचे उठे हुए हों। उनकी महत्वाकांक्षा यह होती कि वह विशुद्ध जीवन व्यतीत करते हुए जब कार्य से अलग हों तो उनके देशी या विदेशी बैंक में या जमीन में, या कारखानों में बहुत-सा धन हो या नहीं? परन्तु प्रजा के हृदय में उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अवश्य हो।

मन्त्रियों के बारे में आचार्य का दूसरा निर्देश यह है-

अविनीतं स्नेहमात्रेण न मन्त्रे कुर्वीत।

जिसमें शिष्टाचार और सज्जनता न हो, उसे केवल प्रिय होने के कारण ही मन्त्री न बनाएं। यदि इन गुणों से हीन कोई मन्त्री होता तो आचार्य चाणक्य उसे तुरन्त हटा देने में तनिक भी देर न लगाते।

विदेशी नीति का आधार

विदेश सम्बन्धी नीति के विषय में आचार्य का मत प्रसिद्ध है, आचार्य ने कहा है- **अनन्तरः प्रकृतिः शत्रुः** अर्थात् जिस देश की सीमा अपने देश से मिलती है वह अपना स्वाभाविक शत्रु है। स्वभाविक शत्रु का यह अभिप्राय नहीं कि दोनों पड़ोसी सदा लड़ते रहते हैं, या उन्हें लड़ते रहना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि ऐसे अनेक कारण हैं, जिनसे दो पड़ोसी देशों में सदा संघर्ष की सम्भावना प्रायः बनी रहती है इस कारण पड़ोसी देशों के शासकों को एक दूसरे से हमेशा सावधान रहना चाहिए। किसी देश के शासक को यह न समझना चाहिए कि अमुक पड़ोसी से हमारा कभी

झगड़ा नहीं हुआ, इस कारण आगे भी कभी न होगा। फलत: यदि आचार्य चाणक्य पर भारत के शासन का भार होता तो वह चीन, पाकिस्तान और बर्मा- तीनों के सीमा प्रान्तों पर सुरक्षा का समान रूप से प्रबन्ध करते। यह समझ कर कि सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र में चीन भारत का इतना ऋणी है कि वह कृतज्ञतावश सदा भारत का मित्र बना रहेगा, ऐसी निराधार कल्पना आचार्य के दिमाग में कदापि नहीं आ सकती थी।

देशों की मित्रता का आधार

दो देश कैसे मित्र बने रह सकते हैं? इस प्रश्न का समाधान चाणक्य के इस सूत्र से होता है-

नातप्तलौहो लौहेन सन्धीयते

अर्थात् बराबर तपा हुआ लोहा ही परस्पर मिल सकता है, ठंडा लोहा नहीं। यह निश्चयात्मक बात समझनी चाहिए कि केवल शान्ति की रट लगाने से या शान्ति की सन्धि करने से भी स्थिर शान्ति नहीं रह सकती। शान्ति सम्भव है, शक्तिशाली बनने से। देश को तपा हुआ लोहे का गोला बनना चाहिए ताकि अन्य तपे हुए गोले उससे परस्पर मिल सकें। चाणक्याचार्य के ये विदेश नीति सम्बन्धी सिद्धान्त संसार के कई सदियों के इतिहास से शत प्रतिशत सिद्ध होते हैं। जर्मनी और फ्रांस, फ्रांस और इंग्लैण्ड, जर्मनी और रूस बीच-बीच में कभी मित्र हो जाते हैं, परन्तु इतिहास बतलाता है कि मित्रता किसी अति प्रबल शत्रु के कारण उत्पन्न होती है और भय के जाते

ही वह काफूर हो जाती है। उन देशों में रूप-रंग, वेशभूषा और धर्म में अतिशय समानता रही है, फिर भी पड़ोसी के नाते जिन नैतिक संघर्षों का उत्पन्न होना अनिवार्य है उनके कारण पन्द्रह-बीस वर्षों के बाद किसी न किसी देश में परस्पर झड़प शुरू हो ही जाती है।

देश की गृह नीति का आधार

गृहनीति के बारे में कुछ शब्द लिख कर इस लेख को समाप्त करता हूं। इस बारे में कुछ सूत्र हैं-

दण्डनीतिमधितिष्ठन् प्रजाः संरक्षति।
दण्डः सम्पदा योजयति दण्डाभावे॥
मन्त्रिवर्गाभावः, दण्डनीत्यामायत्तमात्म।
रक्षणम्,दण्डपारुष्यात्सर्वजनद्वेष्योभवति॥

जो शासक दण्ड का प्रयोग करता है, वह प्रजा की रक्षा कर सकता है। दण्ड से राष्ट्र के ऐश्वर्य की रक्षा होती है। यदि समुचित दण्ड का प्रयोग न किया जाए तो अच्छे सलाहकार भी नहीं मिलते। शासन की रक्षा के लिए दण्ड नीति आवश्यक है, किन्तु यह ध्यान रहे कि यदि दण्ड का प्रयोग कठोरता से किया जाए तो सब लोग द्वेष करने लगते हैं।

अपराधियों को दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। तभी देश सुरक्षित रह सकता है। जिस देश का न्याय तंत्र ऐसा हो कि अपराधियों को दण्ड न मिल सके। मिले तो बहुत देर में, और मिल कर अकारण वापस ले लिया जाए, उस देश में अपराध

बढ़ने लगते हैं। निश्चय है कि यदि चाणक्य भारत के प्रधानमन्त्री होते तो वह न्यायालयों की दशा ऐसी निर्बल और ढीली न रहने देते। पहले तो गरीब के लिए न्यायालय के द्वार तक पहुंचना कठिन है, पहुंच भी जाए तो पुष्कल धन के बिना अभियोग नहीं लड़ा जा सकता, फिर हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच भी जाए तो या तो अपराधी छूट जाएगा, अथवा अभियोक्ता का दीवाला निकल जाएगा।

चाणक्याचार्य के शासन में ऐसी पेचीदा, महंगी न्याय प्रणाली न रहती। उसमें खूनी और लुटेरे निर्दयतापूर्वक न विचरते और शान्तिप्रिय भले नागरिकों को दुबकने की जरूरत न पड़ती। अपराधी को यह निश्चय होना चाहिए कि उसे दण्ड मिलेगा, तभी अपराध रूक सकते हैं, अन्यथा नहीं।

समझा जाता था कि विद्या और विज्ञान की उन्नति के साथ-साथ अपराध की प्रवृत्ति घटती जाएगी, परन्तु हुआ है इसका उल्टा ही। अनाचार, बलात्कार, और आततायीपन के साधनों को वैज्ञानिक उन्नति ने बढ़ा दिया है, और इंग्लैण्ड से ली हुई न्याय प्रणाली से बड़े-बड़े वकीलों और कानूनी नुक्तों के द्वारा अपराधी को न्यायालय से मिलने वाले दण्ड की आशंका बहुत कम हो गई है। फलतः देश में दिन-दहाड़े खुले अपराध करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

आज शासन को चाणक्याचार्य की आवश्यकता है, सन्तों की नहीं। सन्त यदि जनता के आचरण सम्बन्धी स्तर को

ऊंचा करने में लगे रहें तो बड़ी कृपा होगी। चाणक्य की यही महिमा थी कि वह सेनानी थे, विद्वान् भी थे, और शासक भी थे। वह सब प्रवृत्तियों की सीमाओं को जानते थे। उनमें आदर्श और व्यवहारिकता का समन्वय था। सादगी और समन्वय बुद्धि में यदि किसी वर्तमान काल के नीतिज्ञ को आचार्य के मार्ग का राही माना जा सकता था तो वह सरदार **'वल्लभभाई पटेल'** थे।

यदि भारत के वर्तमान भाग्यविधाता चाणक्य के सूत्रों का और अर्थशास्त्र का ध्यान से अनुशीलन करें तो अवस्थाओं में भारी भेद होते हुए भी आज के शासन के चलाने के लिए बहुत उत्तम निर्देश प्राप्त कर सकते हैं।

प्रजातंत्र के नवीन सिद्धान्तों को अपनाने के साथ-साथ यदि हम भारत की प्राचीन शासन प्रणाली की सादगी तथा पेचीदगियों से रहित कार्यक्षमता को अपनाने का यत्न करें, और शासनकर्ता जनता के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रखने की प्रवृत्ति को बढ़ा सकें तो हमारे स्व-राज्य को सु-राज्य बनने में बहुत सहायता मिलेगी।

चाणक्य की भावनाओं के प्रतीक-सूत्र

सुखस्य मूलं धर्मः ॥१॥

सुख का मूल धर्म है।

धर्मस्य मूलमर्थः ॥२॥

धर्म का मूल अर्थ है।

अर्थस्य मूलं राज्यम् ॥३॥

अर्थ का मूल राज्य होता है।

राज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः ॥४॥

राज्य का मूल इन्द्रियजय है।

इन्द्रियजयस्यमूलं विनयः ॥५॥

इन्द्रियजय का मूल विनय है।

विनयस्य मूलं वृद्धोपसेवा ॥६॥

विनय का मूल वृद्धों की सेवा है। जो उनकी सेवा से प्राप्त होता है।

वृद्धसेवया विज्ञानम् ॥७॥

वृद्धों की सेवा से विज्ञान की प्राप्ति होती है।

विज्ञानेनात्मानं सम्पादयेत् ॥८॥

इस प्रकार प्राप्त विज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है। अतएव इसी का आश्रय लेकर आत्मोन्नति करनी चाहिए।

सम्पादितात्मा जितात्मा भवति ॥९॥

जितात्मा ही जितेन्द्रिय है।

जितात्मा सर्वार्थैः संयुज्यते ॥१०॥

इन्द्रयजयी मनुष्य अपनी समस्त अभिलाषाएं पूर्ण कर लेता है।

अलब्धलाभादिचतुष्टयं राज्यतन्त्रम् ॥११॥

(१) अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करना।

(२) प्राप्त वस्तु की रक्षा करना।

(३) रक्षित सम्पदा की वृद्धि करना।

(४) वृद्धिगत सम्पत्ति को अपने प्रजाजनों के उपयोग में लाना-ये ही चार कार्य राजतन्त्र के मूल आधार होते हैं।

राज्यतन्त्रायत्तं नीतिशास्त्रम् ॥१२॥

राजतन्त्र के सहारे ही नीतिशास्त्र का संचालन होता है।

राज्यतन्त्रेष्वायत्तौ तन्त्रावापौ ॥१३॥

राज्य की सत्ता से ही अर्थशास्त्र की सत्ता टिकती है और नीति के बीज का वपन होता है।

तन्त्रं स्वविषयकृत्येष्वायत्तम् ॥१४॥

अपने देश के कर्त्तव्याकर्त्तव्य के निर्णय में ही तन्त्र की सार्थकता होती है।

आवापो मण्डलनिविष्टः ॥१५॥

राजा राष्ट्रमण्डल के आधीन रहकर नीति-रूपी बीज का वपन करे।

सन्धिविग्रहयोनिर्मण्डलः ॥१६॥

राष्ट्रमण्डल भी सन्धि और विग्रह के आधीन रहता है।

नीतिशास्त्रानुगो राजा ॥१७॥

जो नीतिशास्त्र का अनुसरण करता हुआ राज कार्य करता है, वही राजा होता है।

वृत्तिमूलमर्थलाभः ॥१८॥

नियमानुकूल सद्व्यवहार से ही धन का लाभ होता है।

दण्डे प्रतीतयते वृत्तिः ॥१९॥

दण्ड से व्यवहार होता है।

अर्थमूलौ धर्मकामौ ॥२०॥

अर्थ और काम धन से ही सधते हैं।

अर्थमूलं कार्यम् ॥२१॥

धन से ही संसार के सब काम सिद्ध होते हैं।

धर्मेण धार्यते लोकः ॥२२॥

धर्म के आधार पर संसार टिका हुआ है।

धर्मेण जयति लोकान् ॥२३॥

धर्म से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

मृत्युरपि धर्मिष्ठं रक्षति ॥२४॥

मृत्यु भी धर्मात्मा पुरुष की रक्षा करती है।

दया धर्मस्य जन्मभूमिः ॥२५॥

दया ही धर्म की जन्मभूमि है।

धर्ममूले सत्यदाने ॥२६॥

सत्य और दान धर्म के मूलाधार माने जाते हैं।

कुलानुरूपं वृत्तम् ॥२७॥

अपने कुल की मर्यादा के अनुरूप कार्य करना चाहिए।

कार्यानुरूपः प्रयत्नः ॥२८॥

कार्य के अनुरूप ही प्रयत्न होना चाहिए।

पात्रानुरूपं दानम् ॥२९॥

पात्र के अनुरूप दान दें।

स्वाम्यनुकूलो भृत्यः ॥३०॥

सेवक स्वामी के अनुकूल कार्य करे।

भृर्तवशवर्तिनी भार्या ॥३१॥

पति के वश में रहने वाली पत्नी ही भार्या होती है।

गुरुवशानुवर्ती शिष्यः ॥३२॥

शिष्य को सदा गुरु के अधीन रहना चाहिए।

पितृवशानुवर्ती पुत्रः ॥३३॥

पुत्र सदैव पिता के वश में रहे।

कार्य पुरुषकारेण लक्ष्यं सम्पद्यते ॥३४॥

पुरुषार्थ से कार्य सिद्ध होता है।

पुरुषकारमनुवर्तते दैवम् ॥३५॥

भाग्य पुरुषार्थ का साथ देता है।

न चलचित्तस्थ कार्यावासिः ॥३६॥

चंचल मन वाले व्यक्ति को कार्य में सफलता नहीं होती।

कालवित्कार्यं साधयेत् ॥३७॥

समयानुसार कार्यकर्त्ता सफल होता है।

परीक्ष्यकारिणि श्रीश्चिरं तिष्ठति ॥३८॥

समझकर किये कार्य कर्त्ता के यहां लक्ष्मी ठहरती है।

यः कार्यं न यश्यति सोऽन्धः ॥३९॥

जो अपने व्यवसाय को नहीं देखता वह अन्धा होता है।

नास्त्यप्राप्यं सत्यवताम् ॥४०॥

सत्यवादी के लिये कुछ भी अप्राप्य नहीं होता।

प्रदत्त उद्धरणों से सुस्पष्ट है कि आचार्य चाणक्य राजनीति के मर्मज्ञ पारंगत विद्वान् थे। इसके अतिरिक्त वे व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माणकर्ता निष्णात पण्डित भी थे। उनके माता-पिता तथा गुरुजनों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। इस कारण वह स्वयं आदर्श आचार्य के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने अपने शिष्यों को भी भिन्न-भिन्न विद्याओं का प्रकाण्ड पण्डित बनाया।

जो शिष्य सदा-सर्वदा उनकी आज्ञा पालन करने में और अनुशासन में तत्पर रहे। वह आयुर्वेद, रसायन शास्त्र, कृषि विद्या के विशेषज्ञ थे, साथ ही उच्चकोटि के प्रशासक भी। समाज के संघठक, उद्धारक, उन्नेता थे। उनमें सबसे अधिक महत्व और गौरव की बात यह थी कि वह परम तपस्वी ब्राह्मण थे।

मनु के किये **'ब्राह्मण'** के स्वरूप एवं लक्षण को जीवन में सार्थक करने वाले विप्र प्रवर थे। समाज तथा देश की अनेक जटिल समस्याओं के समाधान में संलग्न रहते हुए भी उन्होंने अध्ययन-अध्यापन को, यजन-याजन को, कर्तव्य-कर्मों को अबाधगत से निभाया। अपने गोत्र की गरिमा को बढ़ाया।

सारे जीवन भर-एक अवधि के लिये-वह अपने पास एक घड़े भर धान्य व अन्न को रखा।

कुटो घटः?

तं धान्य पूर्णं लान्ति संग्रहणन्ति इति कुटलाः।

कुम्भीधान्याः त्यागपरा ब्राह्मणः श्रेष्ठाः।

तेषां गोत्रापत्ये कौटिल्यो विष्णुगुप्तो नाम।

जो ब्राह्मण एक घड़े मात्र से अधिक अन्न नहीं रखते थे ऐसे त्यागी, तपस्वी, श्रेष्ठ ब्राह्मणों की परम्परा को राजर्षि चाणक्य ने अपने जीवन में उतारा।

वह राष्ट्र पुरुष **"राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि"** की प्रार्थना प्रभु से नित्य प्रति करते थे। अतः वह राष्ट्र-निर्माता बने। उन्होंने सहस्र योजन विस्तीर्णा ससागरान्ता भारत भूमि का सम्राट अपने महान् योद्धा शिष्य चन्द्रगुप्त को बनाया। देश की रत्नगर्भा वसुन्धरा को आक्रान्ताओं, आततायियों से सुरक्षित किया।

स्वराष्ट्रं धीमता येन विष्णुगुप्तेन सुरक्षितम्।

तस्मै श्रेष्ठाय विप्राय भूयोभूयो नमो नमः॥

राष्ट्र रक्षक उस परम तपस्वी महान् त्यागी ब्राह्मण विष्णु गुप्त अर्थात् चाणक्य को राष्ट्र का पुनः पुनः अभिनंदन।

●●●

हमारे द्वारा अतिशीघ्र छपकर आने वाले लघु साहित्य की सूची

शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी सरस्वती कृत-

1. क्या रावण के दस सिर और बीस हाथ थे?
2. क्या जटायु पक्षी था?
3. क्या रावण वध विजयी दशमी को हुआ था?
4. मारीच और सोने का हिरण?
5. पशुबलि अधर्म है।
6. जीवित पितर।
7. हनुमान आदि वानर बन्दर थे या मनुष्य?
8. भारतीय करण
9. शिवाजी का पत्र महाराजा जय सिंह के नाम।
10. संध्या के दो मंत्रों की व्याख्या।
11. मूर्ति पूजा की हानियां।
12. पुराणों को पढ़िये तो।
13. गीता और दयानन्द।
14. गीता और वेद।
15. गीता में ईश्वर का स्वरूप।
16. अमर प्रमाण सागर (दोनों भाग सम्पूर्ण)
17. कौन कहता है द्रौपदी के पांच पति थे?
18. दीपावली पर्व क्या है?
19. पुराणों की असलियत।

नोट : अन्य जानकारी के लिए प्रकाशन से पत्र-व्यवहार करें।

-लाजपत राय अग्रवाल

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें जो अतिशीघ्र छपकर आने वाली हैं।

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक
1.	भारतवर्ष का इतिहास। (यह पुस्तक लाला जी द्वारा लाहौर जेल में तैयार की गयी थी।)	पंजाब केसरी लाला लाजपत राय
2.	निर्णय के तट पर (भाग-6) (विभिन्न विषयों पर आधारित प्राचीन दुर्लभ शास्त्रार्थों का संग्रह)	संकलनकर्ता- अमर स्वामी सरस्वती तथा लाजपत राय अग्रवाल
3.	जेन्दअवेस्ता (मूल तथा हिन्दी अनुवाद सहित)	-ज़रथुष्ट्र हिन्दी अनुवाद-प्रो0 राजाराम
4.	सृष्टि का इतिहास	पं. लेखराम आर्य मुसाफिर मुख्य सम्पादक-अमर स्वामी सरस्वती
5.	बाईबिल ईश्वरीय संदेश	हरिकृष्ण वाप्ता
6.	वेदों में भौतिक विज्ञान	डा0 (श्रीमती) ऋचा योगमयी
7.	श्रीमद्भागवत समीक्षा	डा0 श्रीराम आर्य
8.	गीता सन्देश (मूल, गद्य, पद्य, चैपाई एवं दोहों सहित)	भाष्यकार : स्वामी समर्पणानन्द पद्यानुवादकर्ता-अवधेश शर्मा

प्रचार-प्रसार हेतु अनेकों विषयों पर आधारित छोटे-छोटे ट्रैक्ट विभिन्न लेखकों द्वारा लिखित विपुल मात्रा में प्रकाशित किये गये हैं। इच्छुक सज्जन प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित करें, जन सामान्य के अन्दर प्रचार-प्रसार का सबसे उत्तम माध्यम ट्रैक्ट (लघु पुस्तकें) ही हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्यानुसार खरीद कर नि:शुल्क वितरण कर वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में अपना विशेष योगदान दे सकता है।

- लाजपतराय अग्रवाल

PH. 0120-2701095, 09910336715, 09810816715, 09871230321

साहित्य जगत में जिसका नाम ही काफी है।

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद- २०१००२ (उ.प्र.)

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com
Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042
M. : 09910336715, 09810816715, 09871230321

चतुर्थ संस्करण, मार्च सन् २०१५ ई० ☐ मूल्य : दस रुपये

कृपया आपसे अनुरोध है की पुस्तक की हार्डकॉपी प्रकाशन से प्रचुर मात्रा में मंगवा कर धर्म रक्षा हेतु वितरण करें

धन्यवाद ।

आर्य पिंकु प्रधान

हमारे फेसबुक पेज से जुड़ें

facebook.com/AryamOfficial

पुस्तकें हमें स्केन कर भेजें - Officialaryam@gmail.com

खण्डन–मण्डन,वैदिक,पुराने पुस्तकें या ऐसे पुस्तकें जो वर्तमान रीप्रिंट न हो रहा हो जिससे लोगों को ज्ञान मिले .

विश्व को आर्य बनाने केलिए हमारे साथ जुड़ें